सफल रीनल ट्रान्सप्लान्टेशन (किडनी प्रत्यारोपण) के लिए जरुरी डॉक्टरो की टीम, उपकरणो और सुविधाओ से हमारे अस्पताल सज्जित है, जिनमें शामिल हैः

- बहुत अनुभवी और उच्च प्रशिक्षित डॉक्टरो की टीम
- मरीज़ और उनके रिश्तेदारो के लिए सुविधाजनक और उपर्युक्त परामर्श की व्यवस्था
- रीनल ट्रान्सप्लान्ट के विषय में विशेषज्ञ और उस पर महत्वपूर्ण राय रखने वाले लोगो से बनी रीनल ट्रान्सप्लान्ट समिति द्वारा पारदर्शी, गैर-आपत्तिजनक और नैतिक समीक्षा
- ओर्गन ट्रान्सप्लान्ट के लिए राज्य सरकार के दिशानिर्देशों का विनियामक अनुपालन
- गुर्दे के दाता में से गुर्दा को निकालने से लेकर, मरीज़ के उसके प्रत्यारोपण तक की पुरी प्रक्रिया में, सर्वश्रेष्ठ संक्रमण नियंत्रण प्रथाओ का अनुपालन

डॉ. मयुर पाटील
एम.बी.बी.एस., एम.डी., डी.एम
कन्सलटन्ट नेफ्रोलोजिस्ट और ट्रान्सप्लान्ट फिजिशियन
मोबाईल : +91-9727765779
इमेल : mayur.patil@cims.org

डॉ. रेचल शाह
एम.बी.बी.एस., एम.डी. (मेडीसीन), डी.एम. (नेफ्रोलॉजी)
कन्सलटन्ट नेफ्रोलोजिस्ट और रीनल ट्रान्सप्लान्ट फिजिशियन
मोबाईल : +91-9099062755
इमेल : rechal.shah@cims.org

CIMS®
CARE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Earning Trust with World-Class Practices

सीम्स अस्पताल
रजी. ऑफिस : पंचामृत बंगलो के सामने, शुकन मॉल के पास,
ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060.
फोन : +91-79-2771 2771-72 फेक्स : +91-79-2771 2770

अपोइन्टमेन्ट के लिये फोन : +91-79-3010 1008
मोबाईल : +91-98250 66661 ईमेल : opd.rec@cimshospital.org

सीम्स अस्पतालकी एप्लीकेशन उपलब्ध है।

App Store | Download on the Windows Phone

CIMS Hospital Pvt. Ltd. | CIN : U85110GJ2001PTC039962 | info@cims.org | www.cims.org

एम्बयुलन्स और आपातकालीन सेवायें : +91-98244 50000, 97234 50000

सीम्स नेफ्रोलोजी और रीनल ट्रान्सप्लान्ट

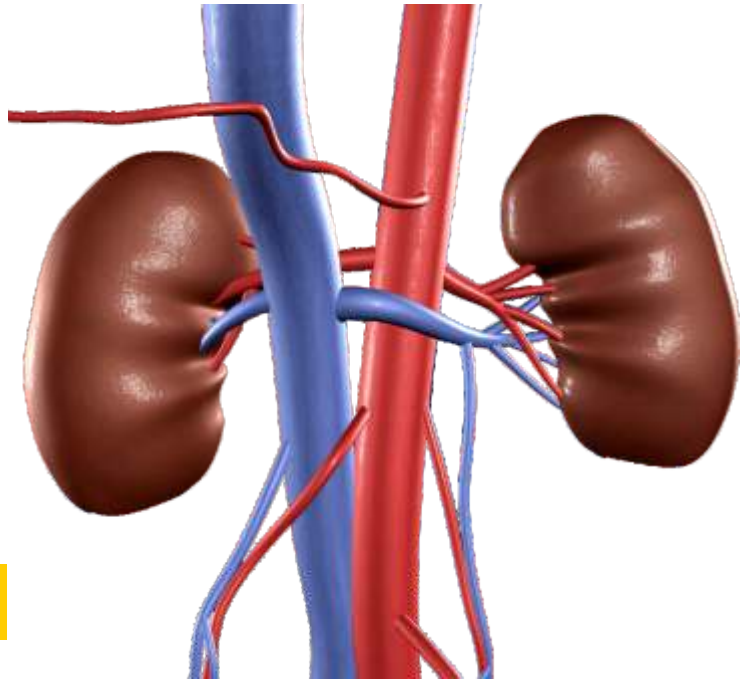

CIMS®
CARE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Earning Trust with World-Class Practices

नेफ्रोलॉजी क्या है?

मानव शरीरमें दो गुर्दे (किडनी) होते हैं, जो शरीर के पीछे की और स्थित हैं । गुर्दे के काम खून को साफ करना और खून में से अनावश्यक झैरी पदार्थो को निकाल देना है । नेफ्रोलन गुर्दे की एक बुनियादी संरचनात्मक और कार्यात्मक इकाई है । नेफ्रोलॉजी गुर्दे से संबंधित बीमारीयों और विकारो का विज्ञान है ।

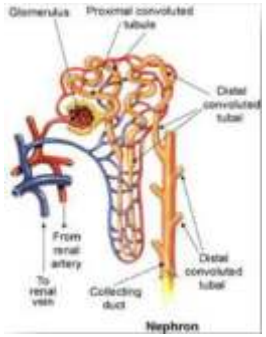

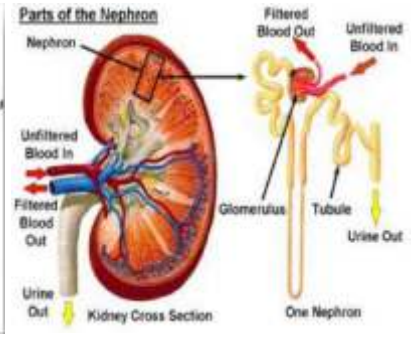

डायालीसीस

जब गुर्दा अपना काम नहीं कर पाता है, यानि कि गुर्दा शरीर को काम करने के लिए जरुरी और सामान्य मापदंड बनाए रख्नने के लिए न्यूनतम आवश्यकता तक पुरी नहीं कर पाता है, तो यह स्वास्थ्य स्थिति का इलाज करने के लिए गुर्दे का कार्य अन्य कृत्रिम उपकरणों को सोंपा जाता है, यानि कि डायालीसीस, या क्षतिग्रस्त गुर्दे की जगह पर नए स्वस्थ गुर्दे को उस व्यक्ति के शरीर में प्रत्यारोपित किया जाता है, यानि की रीनल ट्रान्सप्लान्ट (गुर्दे का प्रत्यारोपण)
एक कृत्रिम उपकरण के माध्यम से रक्त को शुध्द करने वाली प्रक्रिया को डायलिसिस कहा जाता है ।

डायालीसीस के प्रकार

१. हेमोडायालीसीस
२. पेरिटोनियल डायालीसीस

हेमोजायालीसीस

- इस प्रणाली में, हेमोलाइलाजर नामक एक मशीन द्वारा रक्त शुध्द किया जाता है । शुद्धिकरण के लिए रक्त मशीन में से गुजरता है और उसके बाद शुध्द रक्त फिर से शरीरमें फिर से डाला जाता है ।
- हेमोडायालिसीस कराने के लिए ए.वी. फिश्च्युला या डायालिसीस कैथेटर की जरुरत पडती है । डायालीसीस कैथेटर छोटी या लंबी अवधि के लिए हो सकता है ।
- जिस मरीज़ की दोनो किडनी स्थायी रुप से क्षतिग्रस्त हो गई हैं और बिलकुल ही काम न कर रही हों, उन्के नेफ्रोलॉजीस्ट, यानि की किडनी संबंधित बीमारियों के विशेष चिकित्सक की सलाह के मुताबिक, सप्ताह में दो से तीन बार हिमोडायालीसीस करवाना पडता है ।
- जिन मरीज़ो के गुर्दे के कार्य में गंभीर लेकिन अस्थायी रुप से कमी हुई हो, उन्हें भी हीमोडायालीसीस करवाने की जरुरत पडती है ।
- यह उपचार अस्पताल में केवल अनुभवी नेफ्रोलॉजिस्ट और गुर्दे के रोगो के प्रबंधन में अच्छी तरह प्रशिक्षित कर्मचारियों की देख्रेख में किया जाता है ।

पेरिटोनियल डायालीसीस

- पेरिटोनियल डायालीसीस, हिमोडायालीसीस के समान और उतनी ही प्रभावी, डायालीसीस करने के लिए एक और तरीका है ।
- जीन मरीज़ो के गुर्दो को स्थायी रुपसे नुकसान पहुंचा हो और वे ठीक से काम न कर पाते हों, उनके लिए पेरिटोनियल डायालिसीस, एक दीर्धकालिन उपचार के रुप में किया जाता है, और इस प्रकार के डायालीसीस को कंटिन्युअस एम्ब्युलेटरी पेरीटोनियल डायालीसीस (सीएपीडी) कहा जाता है ।
- इस उपचार तरीके में एक रबड की नली (ट्युब) को पेट के हिस्से में डाला जाता है और उसे वहीं रख्रा जाता है ।
- नेफ्रोलॉजिस्ट की सलाह के मुताबिक, इस रबड ट्युब में से, दिन में ३ से ४ बार, पेरिटोनियल डायालीसीस के लिए विशेष तरल पदार्थ (सोल्युशन), मरीज़ के शरीर में डाला जाता है ।
- रक्त में मौजुद विषाक्त पदार्थो को निकालने के लिए डायालीसीस के इस विशेष तरल पदार्थ को ४ घंटे तक पेट में रहने दिया जाता है, और फिर उस विषाक्त पदार्थो वाले डायालीसीस के सोल्युशन को पेट से बाहर निकाला जाता है ।
- शरीर में पेरिटोनियल सोल्युशन को अंदर दाख्रिल करने की और बाहर निकालने की प्रक्रिया को दिन में ३ से ४ बार करनी आवश्यक है ।
- जिन मरीज़ो के लिए ए.वी. फिश्च्युला या लंबी अवधि वाले डायालीसीस कैथेटर द्वार डायालीसीस करवाना मुनकिन नहीं है, उनके लिए डायालीसीस का यह तरीका बहुत उपयोगी है ।
- यह विधि उन रोगियों में नहीं होती है जो कि गुर्दे के प्रतिरोपित है ।
- जिन मरीज़ो ने रीनल ट्रान्सप्लान्ट (गुर्दे का प्रत्यारोपण) करवाया हो, उनके लिए यह तरीका उपर्युक्त नहीं है ।

सीम्स में 6 डायालीसीस वर्क स्टेशन है और 2017 में, अस्पताल में लगभग 9075 हीमोडायालीसीस प्रक्रियाएं की गई है ।

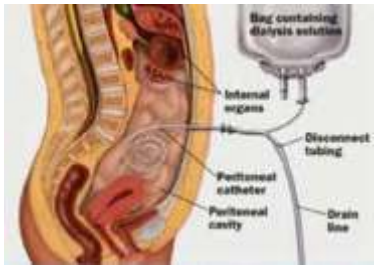

रीनल ट्रान्सप्लान्ट (गुर्दे का प्रत्यारोपण)

- जब किसी मरीज़ के गुर्दे पुरी तरह से ख्रराब हो गइ हों और अपना काम बिल्कुल ही नहीं कर सकते हों, तो उन मरीज़ो के लिए, रीनल ट्रान्सप्लान्ट, उपचार का सबसे अच्छा विकल्प है । कानुनी रुप से, करीबी रिश्तेदार, जैसे कि माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन, बेटा-बेटी और पति-पत्नि अपने गुर्दे एक दुसरे को दे सकते है ।
- इस प्रकार के ट्रान्सप्लान्ट को लाईव रिलिटेड रीनल ट्रान्सप्लान्ट कहा जाता है ।
- जिन मरीज़ो में, करीबी रिश्तेदारों के साथ गुर्दा मेच नहीं होता, वे मरीज़ डीसीज्ड (मृत)/कैडवेरिक रीनल ट्रान्सप्लान्टेशन में, ब्रेईन-डेड मरीजों (जिन मरीज़ो के मस्तिष्क ने कार्य करना बंद कर दिया हो) में से, ऑपरेशन द्वारा गुर्दे को निकाल दिया जाता है, और जिन मरीज़ो को गुर्दे की आवश्यकता हो, उनमें गुर्दे का प्रत्यारोपण कर दिया जाता है ।
- रीनल ट्रान्सप्लान्ट के लिए तीसरा विकल्प है स्वैप रीनल ट्रान्सप्लान्ट, जो उन मरीज़ो के लिए है, जो कि एक दुसरे से संबंधित नहीं है ।
- रीनल ट्रान्सप्लान्ट की प्रक्रिया शुरु हो उससे पहले, गुर्दे के दाता (डोनर) और वह मरीज़ जिसमें उस गुर्दे का प्रत्यारोपण किया जानेवाला हो, उन दोनों के लिए कई परीक्षण और अन्य प्रक्रियाएं आवश्यक है ।
- किडनी ट्रान्सप्लान्ट करवाने के बाद, मरीज़ को डॉक्टर द्वारा सुचित की गई जरुरी दवाईयों, पुरी जिंदगी नियमित रुप से लेनी पडेगी, जिससे की उनमें प्रत्यारोपित गुर्दा ठीक से कार्य करे ।
- इन मरीज़ो को, अपने स्वास्थ्य के लिए, पुरी जिंदगी नेफ्रोलॉजिस्ट के पास फोलो-अप की लिए जाना पडेगा ।
- रीनल ट्रान्सप्लान्ट के ऑपरेशन में, पुरानी किडनी को निकाले बिना ही, नई किडनी को, पेट के निचले हिस्से में दाई अआऐर रख्रा जाता है ।